इन्दौर जिले की आंगनवाड़ी कार्यक्रम का सहायिकाओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन

हंसराज पाल
आचार्य (से.नि.),
शिक्षा अध्ययनशाला विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर

दुर्गा चौहान
शोधार्थी,
शिक्षा अध्ययनशाला विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर

सारांश

आंगनवाड़ियों की सहायिकाओं के कार्यो के आधार पर आंगनवाड़ी के कार्यक्रम का मूल्यांकन करना था। शोध हेतु शोधीका द्वारा न्यादर्श के रूप में इन्दौर शहर की 10 आंगनवाडीं की सहायिकाओं का चयन किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधीका द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रदत्त के विश्लेषण हेतु आवृत्ति एवं प्रतिशत का उपयोग किया गया। परिणाम ज्ञात कर निष्कर्ष निकाले गये।

मुख्य शब्द : आंगनवाड़ी, प्रतिक्रियाए, मूल्यांकन, सहायिका।

प्रस्तावना

आंगनवाड़ी एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से माता एवं शिशुओं को उनके निवास के समीप समेकित सेवाएँ प्रदान की जाती है। इन सेवाओं का क्रियान्वयन भारत सरकार द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किया जाता है, जिनके अंतर्गत समेकित सेवाएँ जैसे जन्म से 6 वर्ष के बालकों व माताओं को पोषण आहार, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच सेवाएँ, पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विद्यालय पूर्व अनौपचारिक शिक्षा आदि प्रदान की जाती है। योजना का संचालन 2.10.1975 से किया जा रहा है। जिसके द्वारा हमारे देश के वातावरण के अनुसार बालकों का सर्वागीण विकास किया जाने का प्रयास किया जा रहा है। आंगनवाड़ी योजनाओं का क्रियान्वयन निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये किया गया। इन उद्देश्यों को प्राप्त किया जा रहा है या नहीं इसे जानने के लिये आंगनवाड़ी की पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है। मूल्यांकन के द्वारा ही समेकित सेवाओं की वर्तमान स्थिति का पता लगाया जा सकता है।

औचित्य

आंगनवाड़ी से संबंधित विभिन्न पक्षों पर शोधकार्य किये गये जैसेः– शर्मा (1990) ने हरियाणा की ग्रामीण योजना भिवानी और आदमपुर में आई.सी.डी.एस. के सामाजिक घटकों की स्थिति पर अध्ययन किया, आर.आई.ई. (1991) ने मध्यप्रदेश तथा बिहार मे आई.सी.डी.एस का अग्रेंजी पर अध्ययन किया, सूद, (1992) ने आई.सी.डी.एस मे पूर्व विद्यालयीन शिक्षा का अध्ययन किया, सुभाषिनी (1999) ने हैदराबाद के शहरों विजयवाड़ा तथा विशाखापट्टनम के शैक्षिक कार्यकर्ताओं, बुजुर्गो, अनुदेशकों की दृष्टि से बालवाड़ी शैक्षिक कार्यक्रमा का अध्ययन पर शोध कार्य किया। किन्तु ''इन्दौर जिले की आंगनवाडी कार्यक्रम का सहायिकाओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन'' पर कोई शोध कार्य नहीं किया गया। अतः प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का निम्न उद्देश्य था। इन्दौर जिले की आंगनवाड़ियों कार्यक्रम का सहायिकाओं की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन करना।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन 10 सहायिकाओं के स्तरीकृत दैव न्यादर्श पर किया गया। अध्ययन हेतु न्यादर्श का चयन इन्दौर जिले के चारो विकासखण्डों इन्दौर, महू, सांवेर, तथा देपालपुर की समस्त 7 परियोजनाओ में से दैव न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। जिनकी उम्र 21–60 वर्ष के मध्य थीं। वे सामान्य, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की थीं।

उपकरण

प्रदत्त संकलन हेतु शोधकों द्वारा विकसित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्त संकलन हेतु शोधकों ने इन्दौर जिले के परियोजना अधिकारी से संपर्क कर अपना परिचय दिया और अपने शोधकार्य का उद्दे"य बताकर उनसे अनुमति लेकर शोधकार्य हेतु प्रदत्त संकलन के लिये आंगनवाड़ी केन्द्रों के सहायिकाओं की पते मय सूची प्राप्त की गयी। तत्प"चात् शोधकों ने आंगनवाड़ियों की पर्यवेक्षकों से तादात्म्य स्थापित कर प्र"नावलिया भरवायी गयी।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त वि"लेषण आवृत्ति एवं प्रति"ात द्वारा किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

आंगनवाड़ी सहायिकाओं की जातिवार संख्या को तालिका 1 में द"ार्ाया गया है।

तालिका 1
आंगनवाड़ी सहायिकाओं की जातिवार संख्या को दर्शाती तालिका

क्रमांक	जति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	अनुसूचित जनजाति	04	40
2	अनुसूचित जाति	03	30
3	पिछड़ा वर्ग	02	20
4	सामान्य	01	10

तलिका 1: से यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति की 40 प्रति"ात, अनुसूचित जाति की 30 प्रति"ात, पिछड़ा वर्ग की 20 प्रति"ात व सामान्य वर्ग की 10 प्रति"ात महिलाएं आंगनवाड़ी में सहायिका के पद पर कार्यरत हैं। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण वे सहायिका के पद पर कार्य करना पसंद करती है।

आंगनवाड़ी केन्द्र से सहायिका के घर की दूरी को आवृत्ति एवं प्रति"ात को तालिका 02 में द"ार्ाया गया है।

तालिका 2
आंगनवाड़ी केन्द्र से सहायिका के घर की दूरी को दर्शाती तालिका

क्र. सं.	आंगनवाड़ी से सहायिका के घर की दूरी	आवृत्ति	प्रतिशत
1	एक से दो किलोमीटर	06	60
2	दो से चार किलोमीटर	03	30
3	चार किलोमीटर से अधिक	01	10

तलिका 2: से यह स्पष्ट होता है कि आंगनवाड़ी केन्द्र से सहायिका के घर की दूरी एक से दो किलामीटर 60 पति"ात, दो से चार किलामीटर 30 प्रति"ात, चार किलामीटर से अधिक 10 प्रति"ात, पायी गयी। इसका संभावित कारण हो सकता है कि आंगनवाड़ी की सहायिका पद की नियुक्ती वही के आंगनवाड़ी केन्द्र के समीप रहनें वाली महिलाओं में से ही कि जाती है।

आंगनवाड़ी केन्द्र में कार्यकर्ता के काया में सहायिका द्वारा मदद को आवृति एंव प्रति"ात को द"ार्ाया गया है। प्रति"ात को तालिका 03 में द"ार्ाया गया है–

तालिका 3
आंगनवाड़ी में कार्यकर्ताओं के कार्यक्रम में सहायिका द्वारा मदद को दर्शाती तालिका

क्र सं.	आंगनवाड़ी केन्द्र में कार्यकर्ता के कार्यो में सहायिका द्वारा मदद	आवृत्ति	प्रातिशत
1	बच्चों को केन्द्र पर एकत्रित करने में	08	80
2	बच्चों एंव माताओं का वजन करनें में	04	40
3	गर्भवती महिलाओं एंव बच्चों के टीकाकरण में	02	20

उपरोक्त तालिका 3: से स्पष्ट होता है कि आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों को केन्द्र पर एकत्रित करकें 80 प्रति"ात, बच्चों को एंव माताओं का वजन करने में 40 प्रति"ात, गर्भवती महिलाओं एंव बच्चों के टीकाकरण में 20 प्रति"ात कार्यकता के काया में सहायिका द्वारा मदद कि जाती पायी गयी, इसका संभावित कारण यह हो सकता कि आंगनवाडो में इन सभी कायो को सहायिका द्वारा किया जाता है। जिससे कार्यकता केन्द्र को सुचारू रूप से चला सके।

आंगनवाड़ी में कार्य करते समय सहायिका की समस्याओं को आवृति एव प्रति"ात को तालिका 04 में द"ार्ाया गया है।

तालिका 4
आंगनवाड़ी में कार्य करते समय सहायिकाओं की समस्याओं को दर्शाती तालिका

क्र सं.	सहायिका को कार्य करने में होने वाली समस्याएँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बच्चों को केन्द्र पर लाने की समस्याएँ	06	60
2	मानदेय कम होने की समस्या	08	80
3	आंगनवाड़ी केन्द्र का समय अधिक होने की समस्या	05	50
4	पालकों की समस्या	03	30
क्र सं.	सहायिका को कार्य करने में होने वाली समस्याएँ	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बच्चों को केन्द्र पर लाने की समस्याएँ	06	60
2	मानदेय कम होने की समस्या	08	80
3	आंगनवाड़ी केन्द्र का समय अधिक होने की समस्या	05	50
4	पालकों की समस्या	03	30

तालिका 4: से स्पष्ट होता है कि बच्चों को केन्द्र पर लाने की समस्या 60 प्रति"ात, मानदेय कम होने की समस्या 80 प्रति"ात, आंगनवाड़ी केन्द्र का समय अधिक होने की समस्या 50 प्रति"ात, पालकों की अज्ञानता 30 प्रति"ात, इसका संभावित कारण हो सकता है कि आंगनवाड़ी की सहायिका को बच्चों क लाने हेतु घर घर जाना होता है। इसमे समय अधिक लगता है। पालकों की अज्ञानता के कारण वे बच्चों को समय पर आंगनवाड़ी नहीं भेजते है। उनका वर्तमान समय में मिलने वाला मानदेय बहुत कम है। इससे भी वे असंतुष्ट पायी गयी।

आंगनवाड़ी केन्द्र के सफल संचालित करने हेतु सहायिका के सुझाव को तालिका 5 में द"ार्ाया गया है।

तालिका 5

आंगनवाड़ी केन्द्र के सफल संचालित करने हेतु सहायिका के सुझाव को दर्शाती तालिका

क्र. सं.	आंगनवाड़ी केन्द्र के सफल संचालित करने के लिए सहायिका के सुझाव	आवृत्ति	प्रतिशत
1	आंगनवाड़ी केन्द्र का समय कम किया जाए	03	30
2	बच्चों का केन्द्र पर लाने की सुविधा दो जाए	02	20
3	टेबल कुर्सी उपलब्ध किए जाए	04	40
4	मानदेय बढ़ाया जाए	07	70
5	कार्यकर्ता को अन्य विभाग के कार्य ना दिये जाए	02	20

तालिका 5: से स्पष्ट है कि आंगनवाड़ी का समय कम किया जाए 30 प्रति"ात, बच्चों का केन्द्र पर लाने की सुविधा दि जाए 20 प्रति"ात, टेबल कुर्सी उपलब्ध किए जाए 40 प्रति"ात, मानदेय बढ़ाया जाए 70 प्रति"ात, कार्यकर्ता को अन्य विभाग के कार्य ना दिये जाए 20 प्रति"ात, का सुझाव देती पायी गयी। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि आंगनवाड़ी केन्द्र पर बच्चा को दरी पर बैठाया जाता है। अगर टेबल कुर्सी उपलब्ध कराने से बच्चों में आगनवाड़ी में आना पसंद करते हैं। सहायिका को आंगनवाड़ी केन्द्र को सम्भालना होता है। जब कार्यकर्ता की अन्य कार्यो में ड्यूटी रहती है। इसलिए सुझाव देती पायी गयी की उसकी ड्यूटी अन्य कार्य म लगायी न जाए जिससे आंगनवाड़ो को सुचारू रूप से चलाया जा सके।

निष्कर्ष

अतः बच्चों को लाने ले जाने की समस्या का होना पाया गया। कार्यकर्ता की अन्य कार्यो में ड्यूटी रहती है। इसलिए सहायिकाओं को ही आगंनवाड़ी केन्द्र सम्भालना होता है इससे उनका समय भो अधिक होने की समस्या पायी गयी और वर्तमान समय में जो मानदेय सहायिकाओं को दिया जा रहा है। इसी में उन्हे अपना गुजारा करना होता है। महंगाई के अनुसार यह बहुत कम है। अल्प मानदेय की समस्या पायी गयी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दवे जी. (1996). बालवाड़ी. वाराणसी : सर्व सवा संघ प्रका"ान
2. शैरी, जी. पी. (1972). मातृकला एवं ि"ा"ाु कल्याण. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर
3. तलसेरा, एच. (1997). आंगनवाड़ी ि"ाक्षक संदि"ाका. नई दिल्ली : हिमां"ाु पब्लिके"ान्स
4. Buch M. B. (Ed.). (1974). A Survey of Research in Education. Baroda: Centre of Advanced Study in Education.
5. Buch, M. B. (Ed.). (1979). Second Survey of Research in Education (1972-1978). Baroda: Society for Educational Research and Development.
6. Buch, M. B. (Ed.). (1986). Third Survey of Research in Education (1978-1983). New Delhi: NCERT.
7. Buch, M. B. (Ed.). (1991). Forth Survey of Research in Education (1983-1988) Vol I & II. New Delhi: NCERT.
8. NCERT. (1997). Fifth Survey of Research in Education-Vol I (1988-1992). New Delhi: Author.
9. NCERT. (2000). Fifth Survey of Research in Education-Vol II (1988-1992). New Delhi: Author.
10. NCERT. (2006). Sixth Survey of Research in Education-Vol I (1993-2000). New Delhi: Author.
11. NCERT. (2007). Sixth Survey of Research in Education-Vol II (1993-2000). New Delhi: Author.